Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 13 ~ Issue 9 (September 2025) pp: 414-422
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

वैदिक आर्य सभ्यता पर नवीन प्रकाश

डॉ0 श्याम प्रकाश (गोल्ड मेडलिस्ट)
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
इतिहास विभाग, डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड

*Received 14 Sep., 2025; **R**evised 25 Sep., 2025; **A**ccepted 28 Sep., 2025 © The author(s) 2025.*
P**ublished with open access at **www.questjournas.org

मान्यतावादी इतिहासकारों के अनुसार सिन्धु सभ्यता के पश्चात भारतीय इतिहास के कालक्रम में 1500 ई.पू. के आस–पास वैदिक सभ्यता अथवा आर्य सभ्यता की शुरुआत हुई। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्तव विभाग के प्रोफेसर जय नरायण पाण्डेय अपनी पुस्तक **पुरातत्त्व विमर्श** में बताते हैं कि सन् 1934 ई. में आंग्ल पुरातत्त्व वैज्ञानिक वी. गार्डन चाइल्ड ने यह कहा था कि सैन्धव सभ्यता के विनाशकर्ता, आक्रान्ता वैदिक आर्य थे। अर्नेस्ट मैके, मार्टीमर ह्वीलर, स्टुअर्ट पिग्गट एवं डी. एच. गॉर्डन आदि ने भी इस मत का समर्थन किया। जिसके प्रमाण के रूप में वे हड़प्पा से प्राप्त **कब्रिस्तान–एच** संस्कृति के पुरावशेषों को प्रस्तुत करते हैं जो हड़प्पा के पुरावशेषों से भिन्न हैं। **सन् 1946 में मार्टीमर ह्वीलर ने यह कहा कि मुअनजोदड़ो अथवा मोहनजोदड़ो के ऊपरी धरातल से अस्त–व्यस्त अवस्था में जो मानव–कंकाल प्राप्त हुए हैं वे वाह्य आक्रमण अथवा वैदिक आर्य आक्रमण की ही देन है।** यहां से प्राप्त मानव–कंकाल अस्त–व्यस्त अवस्था में घरों तथा सार्वजनिक मार्गों पर पड़े हुए मिले थे। इन साक्ष्यों के आधार पर मार्टीमर ह्वीलर ने यह निष्कर्ष निकाला था कि मोहन–जोदड़ो नगर पर सहसा आक्रमण हो गया था और ये लोग भाग भी नहीं सके थे।

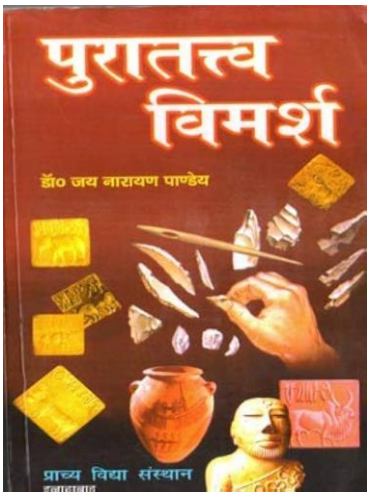

जय नारायण पाण्डेय आगे बताते हैं कि ह्वीलर ने ऋग्वेद के अन्तः साक्ष्यों का इस सन्दर्भ में अत्यन्त बुद्धिमत्ता से उपयोग किया। ऋग्वेद के कतिपय ऋचाओं में असुरों के "अयस" निर्मित "पुरों" के पुरन्दर इन्द्र द्वारा विनष्ट किये जाने का उल्लेख़ मिलता है। **पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आलोक में जय नरायण पाण्डेय का मानना है कि सैन्धव सभ्यता के अतिरिक्त किसी भी ऋग्वेद की समकालिक, कोई अन्य भारतीय नगर अथवा किले हमें ज्ञात नहीं हैं। अर्थात पुरातात्त्विक साक्ष्यों के अभाव में सिन्धु सभ्यता के पश्चात किसी प्रकार के वैदिक आर्यों के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया जा सकता है।** अब अधिकांश विद्वान यह मानते हैं कि सिन्धु सभ्यता के अन्तिम चरण में कोई वैदिक आर्यों का आक्रमण सप्त–सिन्धु प्रदेश में नहीं हुआ था, बल्कि यह माना जाता है कि सिन्धु सभ्यता के विघटन के पीछे कई अन्य कारण थे।[1]

इस बात को सिद्ध करने के लिए कि सिन्धु सभ्यता के पतन के तुरन्त बाद वैदिक सभ्यता अस्तित्व में आयी, मान्यतावादी इतिहासकारों ने भारत तो क्या मध्य एशिया, ईरान इत्यादि की प्राचीन सभ्यताओं में आर्य सभ्यता के साक्ष्य ढूंढने का प्रयत्न किया। ऋग्वेद में वर्णित कुछ देवताओं के नाम के ध्वनि साम्यता के आधार पर इन इतिहासकारों ने एशिया माइनर टर्की के लगभग 1400 ई.पू. के बोगज़कोई से प्राप्त लेख़ में आये इन्दर, मित्तर जैसे देवताओं से अपने इन्द्र, मित्र जैसे देवों का तादात्म्य स्थापित किया। इसके अतिरिक्त भारतीय पुराविद **बृजवासी लाल की पुस्तक आर्यों का आदिदेश भारत** से ज्ञात होता है कि आंग्ल भारतविद् विद्वान एफ़ मैक्समूलर ने वैदिक ऋषियों के वंशक्रम के आधार पर ऋग्वेद की तिथि लगभग 1200 ई.पू. स्वीकार किया है।[2]

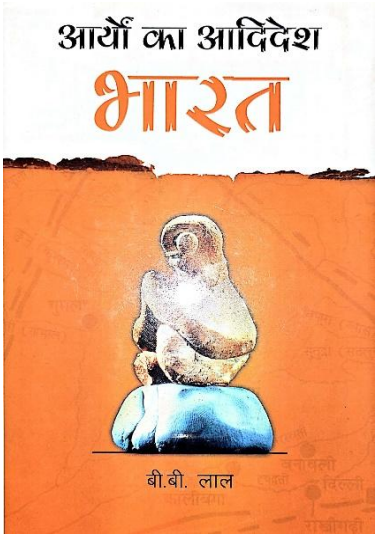

भाषा विज्ञान के कुछ निष्णात आचार्यों का मानना है कि भारोपीय भाषा (भारतीय एवं यूरोपीय) बोल–चाल के प्रचलन के आधार पर वैदिक आर्यों को लगभग 1500 ई.पू. तक प्राचीन माना जा सकता है। आर्य समाज के संस्थापक **मूलशंकर त्रिवेदी अर्थात स्वामी दयानन्द सरस्वती अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश** में बताते हैं कि **वेद एक अरब छियान्नबे करोड़ कई लाख़ एवं कई सहस्त्र वर्ष प्राचीन हैं। (सत्यार्थ प्रकाश, अष्टमसमुल्लासः, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, पृ. 187)**

अब तक विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों की बी. ए., एम. ए. तथा शोध की कक्षाओं में यही पढ़ाया जाता रहा है कि सिन्धु सभ्यता के पश्चात वैदिक आर्य सभ्यता अस्तित्व में आयी किन्तु नवीन अनुसन्धानों से प्राप्त साक्ष्य इस बात की पुष्टि नहीं करते हैं।

हमें ज्ञात है कि सिन्धु सभ्यता के साक्ष्य धरातल से 1921 ई. में दयाराम भीष्म साहनी के प्रयासों से प्राप्त हुए हैं, किन्तु वैदिक आर्य सभ्यता के साक्ष्य अब तक धरातल से नहीं प्राप्त हुए हैं। मान्यतावादी विद्वानों द्वारा वैदिकों के विषय में केवल साहित्यिक साक्ष्य देने की बात कही जाती रही है। यह रोचक है कि वैदिक आर्य सभ्यता के अब तक के प्राप्त समस्त ग्रन्थ **शास्त्रीय संस्कृत भाषा एवं देवनागरी लिपि** में लिख़े हुए हैं जिसके **लेख़न के साक्ष्य 7वीं शताब्दी ई. के बाद** दिख़ायी देते हैं। इसका यह मतलब हुआ कि वेदों का लेख़न कार्य 7वीं शताब्दी ई. के बाद कभी किया गया होगा। इसके लेख़न को **यूनेस्को के नोमिनेशन फार्म वाले लिस्ट** में देख़ा जा सकता है जहाँ **ऋग्वेद के 1 पाण्डुलिपि का लेखन भूर्जपत्र पर तथा 29 पाण्डुलिपियाँ पेपर पर लिख़ी हुई हैं।[3] इसके लेख़न की तिथि 1464 ई. अंकित है।[4]**

3. Writing/Support Material:
One manuscript is written on birch bark and the remaining 29 are written on paper.

4. Script(s):
One manuscript written on birch bark is in the ancient *Sharada* script and the remaining 29 manuscripts are written in the *Devanagari* script. All the manuscripts are in Sanskrit language.

5. Oldest Dated Manuscript:

2

No. 5/1882-83 (1464 AD)

6. Other Details:
Sixteen of the manuscripts contain the *Sayanabhashya*[2]. Five of the manuscripts contain the *Padapatha*[3].

A particularly important manuscript in this collection is the one from Kashmir, written on birch bark, in the *Sharada* script (No. 5/1875-76). It is significant in terms of its historical, intellectual and aesthetic value. The importance of this manuscript is paramount given the unfortunate turbulent situation in Kashmir, where many manuscripts have been

इस प्रकार वेदों के लेख़न को सल्तनत–मुग़ल काल में स्वीकार किया जा सकता है। कई मान्यतावादी इतिहासकार यह मानते आये हैं कि वेद पहले **श्रुति–स्मृति परम्परा** पर आधारित थे उनको लिखा नहीं जाता था बल्कि मुंह से बोलकर द्विजों को सुनाया जाता था। यह प्रक्रिया पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ायी जाती थी किन्तु ज़ब प्रगतिवादी इतिहासकारों द्वारा वैज्ञानिक पद्धित के माध्यम से इस व्यवस्था को समझने का प्रयत्न किया गया तो यह पता चला कि बिना शब्द उच्चारण में त्रुटि के "ओरल ट्रांसमिशन" सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त संस्कृत भाषा में आये अनुस्वार, हलन्त एवं संयुताक्षर इत्यादि का प्रयोग ई.पू. में नहीं प्राप्त होता है। **ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के टकसाल विभाग के अधिकारी जेम्स प्रिंसेप ने 1837 ई.** में मौर्य काल के महाप्रतापी, तेजस्वी, दुर्धर्ष योद्धा चक्रवर्ती सम्राट असोक के अभिलेखों को पढ़ लिया इसके पश्चात हमें देवनागरी के अतिरिक्त एक अन्य, धंम (असोक के अभिलेखों से ज्ञात), बंभी (ललितविस्तर से ज्ञात) अथवा ब्राह्मी (बंभी का अपभ्रंश) लिपि एवं पालि–पाकित भाषा के विषय में सूचना मिली तब जाकर यह पता चला कि भारत में संस्कृत से प्राचीन एक अन्य लिपि बंभी एवं भाषा पालि–पाकित का अस्तित्व था। चूंकि **अधिकांश विदेशी आंग्ल विद्वानों ने 1837 ई. से पहले ही अनेक पुस्तकों का लेख़न किया हुआ था जिसमें उन्होंने संस्कृत को सबसे प्राचीन भाषा एवं देवनागरी को सबसे प्राचीन लिपि के रूप में वर्णित किया हुआ है।** इसी का अनुकरण करते हुए भारतीय मान्यतावादी इतिहासकारों ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि संस्कृत एवं देवनागरी अत्यन्त प्राचीन हैं।

पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक दृष्टिकोण से प्रगतिशील विद्वानों ने 1750 ई.पू. से छठीं शताब्दी ई.पू. तक के काल–खण्ड को **अंधकार युग** की संज्ञा दी है।[5] इस काल में भारत (असोक के अभिलेखों से ज्ञात जम्बूद्वीप) के किसी भी क्षेत्र से किसी प्रकार के लेख, अभिलेख, शिलालेख अथवा गुहालेख की प्राप्ति नहीं होती है। इसके अतिरिक्त किसी प्रकार के साहित्य अथवा पाण्डुलिपि तथा सिक्के की भी प्राप्ति नहीं हुई है। जम्बूद्वीप सहित सप्तसिंधु क्षेत्र में हुए पुरातात्त्विक उत्खननों के किसी भी स्थल से वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति से सम्बन्धित साक्ष्य नहीं प्राप्त हुए हैं।

अब तक पाठ्यक्रमों में वैदिक आर्य संस्कृति के विषय में यह पढ़ाया जाता रहा है कि सैन्धव नगरों के पुरों को ध्वस्त करने वाले वैदिक आर्य थे। विद्वान मानते थे कि ऋग्वेद में इन्द्र को दास एवं दस्युओं का विनाशक पुरन्दर को बताया गया है। ऋग्वेद में दास–दस्युओं को अकर्मन अर्थात वैदिक कियाओं को न करने वाला, अदवयु अर्थात वैदिक देवताओं को न मानने वाला, अयज्वन अर्थात यज्ञादि न करने वाला तथा अन्यव्रत अर्थात वैदिकेतर व्रतों का अनुसरण करने वाला कहा गया है।

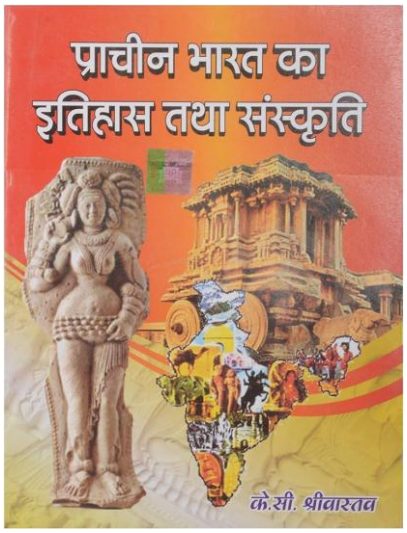

प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति पुस्तक के लेख़क एवं सी. एम. पी. डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद के प्राचीन इतिहास विभाग के प्रोफ़ेसर के. सी. श्रीवास्तव बताते हैं कि अनार्यों अर्थात दास–दस्युओं के समाज़ में लिंग पूजा का प्रचलन था।[6]

के. सी. चटोपाध्याय का मानना है कि ऋग्वेद में वर्णित दास–दस्यु संघर्ष पौराणिक देवासुर संग्राम का ही रूपान्तर है। वैदिक आर्यों द्वारा इस प्रकार से मूलनिवासी अनार्यों को दास एवं दस्यु बनाने का उल्लेख़ ऋग्वेद में प्राप्त होता है। **इसके पश्चात पाठ्यक्रम में आगे** इन वैदिक आर्यों के मूल निवास स्थान को लेकर विद्वानों में मतभेद को दर्शाया जाता है जिसमें भारतीय एवं विदेशी विद्वानों द्वारा विश्व के अलग–अलग क्षेत्रों को आर्यों का निवास स्थान बताया जाता है। मैक्समूलर मध्य एशिया, रोड्स बैक्ट्रिया, एडवर्ड मेयर पामीर का पठार, ब्रेन्डस्टीन यूराल पर्वत, पेनका एवं हर्ट जर्मनी, गाइल्स डेन्यूब नदी, गार्डन चाइल्ड, मेयर, पीक दक्षिणी रूस, गंगानाथ झा ब्रह्मर्षि देश, डी. एस. त्रिवेद मुल्तान स्थित देविका प्रदेश, एल. डी. कल्ल कश्मीर, दयानन्द सरस्वती तिब्बत, बालगंगाधर तिलक उत्तर ध्रुव क्षेत्र को मानते हैं।[7] विनायक दामोदर सावरकर एवं मोहनदास करमचन्द गांधी ने भी वैदिक आर्यों के निवास स्थान को यूरोप से लेकर मध्य एशिया तक के क्षेत्रों को माना है। इसके पश्चात इनके द्वारा बोली जाने वाली भारोपीय भाषा के विषय में चर्चा की जाती है, जिसमें संस्कृत भाषा को सर्वप्राचीन भाषा स्वीकार किया जाता है।

इसके पश्चात **पाठ्यक्रम में ऋग्वैदिक काल का विस्तृत विवरण** प्रस्तुत करते हुए उनके सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन के विषय में विस्तृत चर्चा की जाती है। आगे चलकर उत्तर वैदिक कालीन समाज़ के विषय में बताया जाता है। इसके अन्तर्गत यजुर्वेद, सामवेद, अर्थववेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद तथा वेदांग इत्यादि में आये सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन के संदर्भों के आधार पर उस काल के सामाज़िक व्यवस्था को चित्रित करने का प्रयत्न किया जाता है। इसके पश्चात वैदिक धर्म एवं दर्शन को समझाते हुए विद्यार्थियों को छठीं शताब्दी ई.पू. तक पहुंचा दिया जाता है। इस प्रकार 1500 ई.पू. से लेकर छठीं शताब्दी ई.पू. तक के अंधकार युग को वैदिक काल से परिपूर्ण कर दिया जाता है। **यह रोचक है कि ये समस्त साक्ष्य केवल साहित्यिक स्रोत का ही प्रतिनिधित्व करते हैं, ज़बकि इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण स्रोत पुरातात्त्विक स्रोत को माना जाता है। प्रगतिवादी इतिहासकारों** का यह मानना है कि यदि कोई घटना घटित हुई है तो उसके भौतिक साक्ष्य धरातल में सुरक्षित होंगे जिन्हें वैज्ञानिक विधि से पुरातात्त्विक उत्ख़नन कर बाहर निकाला जा सकता है एवं उस

काल के सही इतिहास को प्राप्त तथ्यों के आधार पर समझा जा सकता है। दुर्भाग्यवश वैदिक काल के पुरातात्त्विक साक्ष्य नहीं प्राप्त हो सके हैं।

प्रगतिवादी इतिहासकार यह बताते हैं कि साहित्यिक स्रोतों के आधार पर अनेक पुरास्थलों के उत्खनन से सम्बन्धित काल–खण्ड के अवशेष प्राप्त हुए हैं जैसे भारत में **चीनी यात्री फाह्यान की पुस्तक फु–को–ओ–की एवं ह्वेनसांग अथवा युवान–च्वांग की पुस्तक सी–यू–की** में वर्णित सन्दर्भों के आधार पर भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के प्रथम महानिदेशक मेज़र जनरल सर अलेक्जेण्डर कनिंघम ने भारत के अनेक बौद्ध स्थलों को ढूंढ निकाला था। इसी प्रकार हेनरिख़ श्लीमन ने एशिया माइनर टर्की से होमर के दो महाकाव्यों इलियट एवं ओडिसी के संदर्भों के आधार पर ट्राय नगर एवं रानी प्रियम के ख़ज़ाने तथा रानी शुबाद की समाधि को ढूंढने का कार्य किया था किन्तु भारत के पुरातत्त्व वैज्ञानिक एवं एडवान्स्ड स्टडी ऑव शिमला के निदेशक एवं भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के महानिदेशक **बृजवासी लाल ने रामायण, टेम्पल एवं रामसेतु** जिसे संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान **डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा "अज्ञात"** अपनी प्रसिद्ध, प्रमाणिक एवं साक्ष्ययुक्त पुस्तक **"क्या बालू की भीत पर खड़ा है हिन्दू धर्म"** में **"रामायण से सम्बद्ध स्थलों का पुरातत्त्व"** कहते हैं, के अन्तर्गत अयोध्या, श्रृंगवेरपुर, भारद्वाज़ आश्रम, नन्दीग्राम तथा चित्रकूट के पुरातात्त्विक उत्खनन जो डा. लाल द्वारा करवाये गये हैं, से लगभग 7वीं शताब्दी ई.पू. तक के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं।[8]

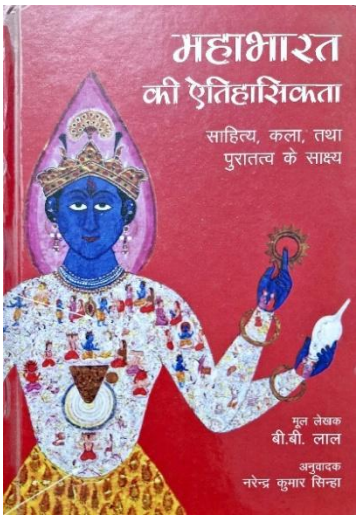

इसके अतिरिक्त बी. बी. लाल द्वारा लिख़ित **(हिस्टोरिस्टिी ऑव महाभारत)** एवं मैडिसन, विस्कांसिन अमेरिका के नरेन्द्र कुमार सिन्हा द्वारा हिन्दी में अनुवादि **महाभारत की ऐतिहासिकता, साहित्य कला एवं पुरातत्त्व के साक्ष्य** नामक पुस्तक में डॉ. लाल ने महाभारत में आये तिलपत, बाग़पत, सोनीपत, पानीपत, बरनावा, हस्तिनापुर, विराट नगर (बैराट), इन्द्रप्रस्थ, कौशाम्बी, सहित अनेक स्थलों के पुरातात्त्विक उत्खनन के माध्यम से इन कालखण्डों की ऐतिहासिकता सिद्ध करने का प्रयत्न किया, किन्तु उत्खनन के दौरान उनको महाभारत एवं रामायण से सम्बन्धित साक्ष्य किसी भी पुरास्थल से नहीं प्राप्त हो सके।[9]

इस प्रकार रामायण एवं महाभारत की ऐतिहासिकता पुरातात्त्विक स्रोतों के आधार पर नहीं की जा सकी। **प्रगतिवादी इतिहासकारों का मानना है कि जैसे महाकाव्यों रामायण एवं महाभारत की ऐतिहासिकता धरातल से प्राप्त भौतिक अवशेषों के आधार पर नहीं सिद्ध की जा सकती उसी प्रकार से वैदिक काल की भी ऐतिहासिकता को सिद्ध नहीं किया जा सकता है।**

श्रुति परम्परा पर प्रगतिवादी इतिहासकारों का यह मानना है कि केवल ऋग्वेद में ही 1028 सूक्त हैं इसके अतिरिक्त यदि अन्य तीनों वेदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों आदि के श्लोकों को मिला लिया जाय तो इनकी संख्या बहुत अधिक हो जाती है ऐसे में बिना उच्चारण त्रुटि के शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करते हुए पीढ़ी दर पीढ़ी मौख़िक लेकर आना सम्भव नहीं है। फ़िर वे बताते हैं कि ज़ब प्राक् मौर्य काल से ही धंम, बंभी अथवा ब्राह्मी लिपि तथा पालि–पाकित भाषा में लेखन का कार्य प्रारम्भ हो गया तब क्यों नहीं वेदों को लिख़ा गया ? उस समय किस भाषा एवं लिपि में वेद आगे बढ़ रहे थे ? इस दौरान किन महर्षियों एवं आचार्यों द्वारा वेदों का मौख़िक वाचन कराया गया ? एक लम्बे समयान्तराल तक धंम लिपि ही अस्तित्व में बनी रही इस दौरान वैदिक लोग कैसे और कहां अपने वैदिक परम्पराओं का निर्वहन कर रहे थे ? क्या बिना व्याकरण के वैदिक ऋचाओं का लेख़न अथवा वाचन सम्भव है ? और वाचन तो उसी का हो सकता है जो कहीं लिख़ा हुआ हो, वैदिक काल यदि 1500 ई.पू. के आस–पास था तो इसका लेख़न कार्य सिन्धु सभ्यता से मिलती–जुलती भाषा एवं लिपि में होना चाहिए था किन्तु हमारे सम्मुख़ जो वेद प्रस्तुत हैं उनका लेख़न कार्य 1464 ई0 के आस–पास किया गया है, ऐसे में वे 1500 ई.पू. तक कैसे प्राचीन हो सकते हैं ? यदि वैदिक साहित्यों की भाषा एवं लिपि की बात करें तो वे शास्त्रीय संस्कृत भाषा एवं देवनागरी लिपि में लिख़े हुए प्राप्त होते हैं और **ज़ब इनके प्रचलन की प्राचीनता तलाशते हैं तो ये 7वीं–8वीं शताब्दी ई. के बाद अस्तित्व में दिख़ायी देते हैं।** इस प्रकार से प्रगतिवादी इतिहासकार सम्पूर्ण तथ्यों के विश्लेषण के पश्चात यह बताते हैं कि वेद बहुत प्राचीन नहीं हैं ज़ब वे लिख़े गये तभी से उनके अस्तित्व को स्वीकारना चाहिए।

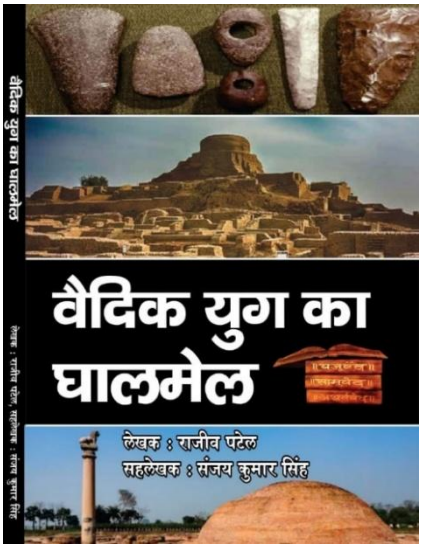

वैदिक युग का घालमेल नामक पुस्तक के लेख़क राजीव पटेल वैदिक सभ्यता पर कार्य करते हुए उसमें छः प्रकार के घालमेल पर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं जिसको हम उनकी ही पुस्तक के सन्दर्भों से समझने का प्रयत्न करते हैं।

घालमेल नं0 1 : भारतीय इतिहास का क्या प्रकार है और इनके मध्य कैसे घालमेल किया गया। सर्वप्रथम वे **तीन प्रकार के इतिहास 1. मान्यतावादी, 2. शैक्षणिक तथा 3. उत्खनन का इतिहास** का ज़िक्र करते हैं। इसके पश्चात इनका विस्तृत विवरण प्रस्तुत करते हुए बताते हैं कि –

"मान्यतावादी इतिहास कहता है कि भारत में मनुष्य की संस्कृति एक लाख़ वर्ष से भी काफ़ी पूर्व से स्थापित है, ज़बकि **शैक्षणिक इतिहास** कहता है कि भारत में मनुष्य की संस्कृति मात्र 10 हज़ार वर्ष के अन्दर की है। आगे वे बताते हैं कि शैक्षणिक इतिहास कहता है कि भारत में वैदिक संस्कृति का उद्भव आज़ से 3500 वर्ष पूर्व में होते हुए यह आज़ तक सतत और निरन्तर समाज़ में विराज़ित चली आ रही है, ज़बकि **उत्ख़नन का इतिहास** कहता है कि भारत में वैदिक संस्कृति का कोई नगर, गांव, मकान, वैदिक अनुयायी का शासक या उसका किला, उसका राज्यादेश, मुद्रा, सील, अभिलेख़, मृदभांड, लिपि, विदेशी यात्री का यात्रा–वृतांत जैसी बातों का मिलना अभी तक सिद्ध नहीं हुआ है। उत्खनन का इतिहास कहता है कि भारत में बौद्ध संस्कृति के असंख्य साक्ष्य उत्खनन द्वारा ज़मीन के नीचे से मिलते हैं, ज़बकि मान्यतावादी ब्राह्मणी वैदिक संस्कृति का इतिहास अभी तक ज़मीन के ऊपर ही ऊपर मिलने का है। इन सब विसंगतियों से स्पष्ट पता चलता है कि भारतीय इतिहास की शैक्षणिक पुस्तकों में सत्ता भोगी और (जातिगत) सम्मान भोगी वर्गों द्वारा जान–बूझकर पाठ्यक्रम में एक निश्चित एजेंडा (निश्चित विषय सूची) के तहत घालमेल युक्त लेख़न करवाया गया है, ताकि समाज़ का नवशिक्षित वर्ग इसी ज्ञान को सर्वोपरि मानता रहे।"

घालमेल नं0 2 : इसमें वे बताते हैं कि वेद, सम्यक काल की भाषा पालि के **"वेदना"** से निकला हुआ शब्द है जिसका **पालि भाषा में शाब्दिक अर्थ अनुभूति एवं वेद का अर्थ अनुभव** होता है लेकिन मान्यतावादियों द्वारा उत्पादित भाषा में वेद का शाब्दिक अर्थ शून्य होते हुए, एक कहानी युक्त पुस्तक का नाम सिर्फ़ वेद होकर रह गया।

घालमेल नं0 3 : जिस प्रकार से जीव–जन्तु, पेड़–पौधों के जीवन प्रमाण हेतु **चार प्राकृतिक महाभूत मिट्टी, पानी, हवा तथा उष्मा** की आश्यकता होती है, उसी प्रकार ब्राह्मणी वेद, वैदिक संस्कृति के जीवन प्रमाण हेतु भी **चार वैदिक महाभूतों वैदिक मंत्र (संस्कृत के छन्द द्वारा निर्मित), वैदिक ग्रंथ (वेद, उपनिषद, पुराण, गीता, रामायण, महाभारत) वैदिक यंत्र (वैदिक देवी देवता की मूर्ति के साथ–साथ उन सभी का मंदिर), वैदिक तंत्र (वैदिक कर्मकाण्ड से युक्त जीवन–संस्कार के प्रचलन के प्रमाण की आवश्यकता) है।** इस प्रकार से राजीव पटेल सवाल ख़ड़ा करते हैं कि अब प्रश्न यह उठता है कि ये चार वैदिक महाभूत का साक्ष्य ऐतिहासिक काल–ख़ण्ड में कब से प्राप्त होता है ?

घालमेल नं0 4 : में वे चाणक्य के अस्तित्व के विषय में चर्चा करते हैं।

घालमेल नं0 5 : इसमें वे पुष्यमित्र शुंग के समय–काल पर चर्चा करते हैं।

घालमेल नं0 6 : इसमें राजीव पटेल बताते हैं कि शैक्षणिक पुस्तकों के माध्यम से वैदिक सभ्यता की शिक्षा दी जाती है। पुनः शैक्षणिक पुस्तकों के अन्दर उत्खनन को आधार मानकर वैदिक से पूर्व और वैदिक के बाद की रही सभ्यता संस्कृति का मिलना बताया जाता है, लेकिन वैदिक सभ्यता–संस्कृति का साक्ष्य कब और कहां मिला ?[10]

इस प्रकार से हमने राजीव पटेल द्वारा वैदिक काल पर किये गये नवीन अनुसंधान को देख़ा जिसमें वे वैज्ञानिक विश्लेषण के पश्चात तथ्यों के आलोक में वैदिक सभ्यता पर अनेक प्रश्न खड़े करते हैं।

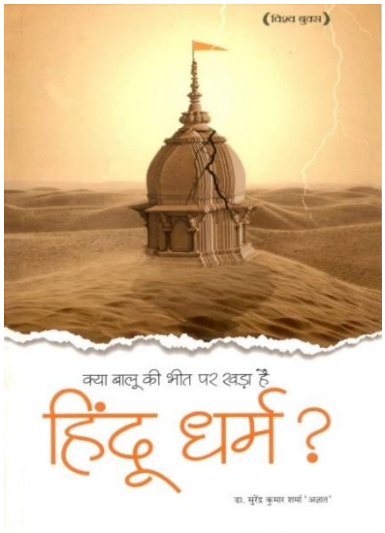

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा 'अज्ञात' ने अपनी प्रसिद्ध **पुस्तक क्या बालू की भीत पर खड़ा है हिन्दू धर्म** में भारतीय जीवन में पलायनवाद अध्याय के अन्तर्गत वैदिक कालीन पलायनवादी व्यवस्था का उल्लेख़ किया है जिसमें वे कहते हैं कि परमात्मा की कल्पना पलायनवाद का एक रूप है। वे वैदिक आर्यों के सोमपान करने से लेकर हवन–पूजन तक की पद्धित की चर्चा करते हैं।[11]

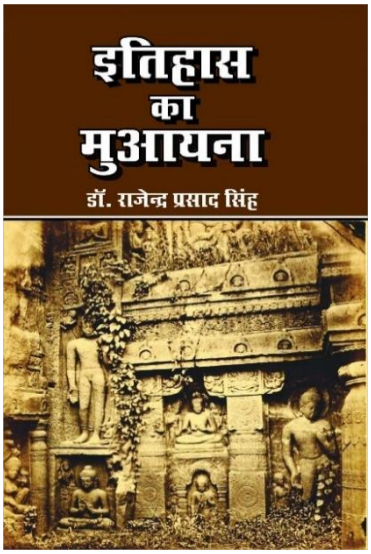

इतिहासकार एवं भाषा वैज्ञानिक डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह अपनी पुस्तक इतिहास का मुआयना में वैदिक सभ्यता को **'झूठ की तोप'** की संज्ञा देते हुए कहते हैं कि "एक झूठ को छिपाने के लिए अनेक झूठ बोलने पड़ते हैं। आपने एक बार झूठ बोल दिया है कि हड़प्पा सभ्यता के बाद उत्तरी भारत में वैदिक युग आया है। अब इसे साबित करने के लिए आप दूसरा झूठ बोल रहे हैं कि उत्तरी भारत में ताम्र–पाषाण युग के बाद सीधे लौह युग आ गया। आपने कांस्य युग की सभ्यता अर्थात बौद्ध सभ्यता को वैदिक युग की झूठी तोप से उड़ा दिया।" इस प्रकार डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह वैदिक सभ्यता के अस्तित्व को नहीं स्वीकार करते हुए दिख़ाई देते हैं। उनका मानना है कि **सिन्धु घाटी की सभ्यता कांस्य कालीन सभ्यता एवं बौद्ध सभ्यता थी।**[12]

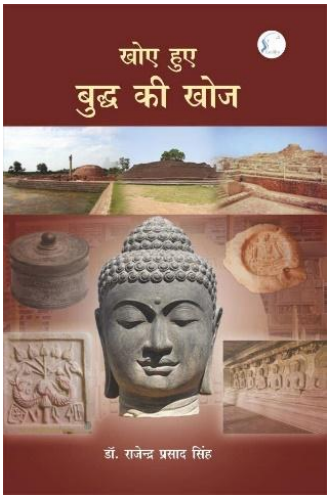

उन्होंने अपनी एक अन्य **पुस्तक खोये हुए बुद्ध की खोज** में **तथागत बुद्ध से पहले 28 बुद्ध** होने का दावा किया है। वे मान्यतावादी इतिहासकारों द्वारा प्रस्तुत किये गये वैदिक काल के समय के काल–खण्ड में भी पूर्व बुद्धों के होने की बात करते हैं।

मान्यतावादी इतिहासकारों का एक वर्ग यह मानता है कि वैदिक काल के पुरातात्त्विक साक्ष्य **एशिया माइनर टर्की के बोगज़कोई** नामक स्थान से प्राप्त अभिलेख में मिल जाता है। अब तक उनका मानना था कि इस **हुर्रियन भाषा** में लिखित अभिलेख पर संस्कृत भाषा की स्पष्ट छाप है। किन्तु नवीन अनुसन्धानों से ज्ञात हुआ है कि बोगज़कोई अभिलेख पर संस्कृत नहीं अपितु पालि–पाकित भाषा की छाप दिखाई देती है। सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक एवं इतिहासकार डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद सिंह बताते हैं कि "पालि–पाकित में **'र'** का प्रयोग पूर्णतः में किया जाता है जबकि संस्कृत में **आधा 'र'** का प्रयोग होता है जो कभी–कभी संयुताक्षर के रूप में भी दिखाई देता है। उनके अनुसार **बोगज़कोई अभिलेख में अब तक जिन इन्द्र, मित्र, वरुण एवं नास्त्य लिखे होने की बात कही जाती रही है, दरअसल वो इंदर अथवा इनतर, अरुन, मिइत्तर, नसत्यान, उरुवान लिखा हुआ है जो पालि–पाकित का शब्द है, न कि संस्कृत का।** इसके अतिरिक्त इसी अभिलेख में अंक के रूप में **तेर, पंज, सत्त, नउवा** इत्यादि का उल्लेख मिलता है जो पालि–पाकित के शब्द हैं।"

इस प्रकार सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक एवं इतिहासकार डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह के द्वारा बोगज़कोई के देवमण्डल एवं अंक पर किये गये नवीन अनुसन्धान के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बोगज़कोई अभिलेख जो हित्ती एवं मितन्नी राजवंश के राजाओं द्वारा संधि स्वरूप हुर्रियन भाषा में लिखवाया गया, पर पालि–पाकित की स्पष्ट छाप है। इस प्रकार वैदिक आर्य के 1400 ई.पू. में एशिया माइनर टर्की में होने के सवाल पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है। सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक एवं इतिहासकार डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह बताते हैं कि संस्कृत का शाब्दिक अर्थ संस्कारित किया हुआ अथवा शुद्ध किया हुआ होता है, तो किस भाषा को संस्कारित करके संस्कृत का निर्माण किया गया ? इस विषय में उनका मानना है कि भारत की ज्ञात सबसे प्राचीन भाषा पालि–पाकित को ही संस्कारित करके संस्कृत भाषा का निर्माण किया गया।

अब सवाल यह उठता है कि किस लिए पालि–पाकित को संस्कारित करके संस्कृत **(बुद्धिस्ट हाइब्रिड संस्कृत)** का निर्माण किया गया होगा ? इस विषय में वे तर्क देते हुए कहते हैं कि नालन्दा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों मे पढ़ाई करने के लिए 7वीं–8वीं शताब्दी ई. में यह आवश्यकता महसूस की गई कि देश–विदेश से आये विद्यार्थी यदि किसी एक भाषा में शिक्षा ग्रहण करेंगे तो पाठ्यक्रम को समझाना आसान होगा। सम्भवतः इसी उद्देश्य से संस्कृत का निर्माण किया गया था। इस बात की पुष्टि **इत्सिंग के यात्रा–वृत्तांत** से हो जाती है। जहां वह बताता है कि उसने **नालन्दा** में लगभग **16 प्रकार की विनयपिटक** को **संस्कृत भाषा** में पढ़ा था। इस प्रकार से यह सिद्ध होता है कि संस्कृत का सही–सही अस्तित्व 7वीं–8वीं शताब्दी ई. में दिखाई देता है। चूंकि **वेद, शास्त्रीय संस्कृत** में लिखे गये हैं जो काल–क्रम में बुद्धिस्ट हाइब्रिड संस्कृत के बाद आते हैं। अतः वेदों के लेखन कार्य को इसके पश्चात का ही माना जा सकता है। प्रगतिवादी इतिहासकार बताते हैं कि वेदों पर ईरानी ग्रन्थ जेन्द अवेस्ता का प्रभाव दिखलाई पड़ता है। अनेक भारतीय एवं विदेशी विद्वान जेन्द अवेस्ता के लेखन की तिथि को बहुत बाद का, ई. सन् का स्वीकारते हैं।

अतः वेदों की प्राचीनता पर अब तक किये गये नवीन शोधों से प्राप्त साक्ष्यों के आलोक में एवं वैज्ञानिक विश्लेषण के पश्चात, किसी भी परिस्थिति में वेद ई.पू. तक प्राचीन नहीं जान पड़ते हैं।

अब सवाल यह खड़ा होता है कि यदि सिन्धु सभ्यता के पश्चात वैदिक सभ्यता नहीं आयी थी, तो फिर क्या था ? क्या किसी भी साक्ष्य से किसी प्रकार के समकालीन प्रमाण प्राप्त हुए हैं ? **वैदिक युग का घालमेल** पुस्तक के लेखक **राज़ीव पटेल** अपनी पुस्तक के **भाग–सी के अन्तर्गत ईसा पूर्व 2000 वर्ष से लेकर ईसा पूर्व 600 वर्ष तक** नामक अध्याय में कहते हैं कि आज के अनेक विद्वान इसी काल–खंड में वैदिक सभ्यता का उदय दर्शाते हैं, जबकि इस काल के भारत में कई अन्य क्षेत्रों से अनेक सभ्यताएं प्राप्त हुई हैं। आज उन सभी सभ्यताओं को **ताम्र–पाषाणिक** सभ्यताएं कहते हैं।

2,000 ई.पू. से लेकर 600 ई.पू. के मध्य भारत के अनेक पुरास्थलों के उत्खनन से प्राप्त पुरा–संस्कृतियां एवं सम्भावित कालक्रम–

1. अहाड़ (बालाथल) संस्कृति : 2500 ई.पू. से 1800 ई.पू.[13]

2. कायथा संस्कृति : 2000 ई.पू. से 1800 ई.पू.[14]

3. मालवा संस्कृति : 1700 ई.पू. से 1200 ई.पू.[15]

4. गैरिक मृद्भाण्ड संस्कृति : ताम्र–निधि संस्कृति (लाल किला पुरास्थल से प्राप्त तिथि 1800 ई.पू.) के समकालीन लगभग 2000 ई.पू. से 1500 ई. पू. तक।[16]

5. सावलदा संस्कृति : 2000 ई.पू. से 1800 ई.पू.[17]

6. चिरांद संस्कृति : 1500 ई.पू. से 700 ई.पू.[18]

7. जोरवे संस्कृति : 1600 ई.पू. से 700 ई.पू.[19]

8. चित्रित धूसर मृद्भाण्ड संस्कृति : लौह कालीन संस्कृति के समकालीन लगभग 1000 ई.पू. से 600 ई.पू. तक।[20]

9. उत्तरी काले चमकीले पात्र–परम्परा वाली मृद्भाण्ड संस्कृति : लगभग 600 ई.पू. तक।[21]

इनमें से अधिकांश संस्कृतियां ताम्र पाषिक एवं ग्रामीण हैं किन्तु महाराष्ट्र से प्राप्त जोरवे संस्कृति के पुरास्थल दायमाबाद एवं इनामगांव से प्राप्त संस्कृति ग्रामीण सभ्यता से नगरीय सभ्यता की ओर प्रसरण को दर्शाती है।[22]

राजीव पटेल अपनी पुस्तक वैदिक युग का घालमेल में बताते हैं कि भारत में कृषक समुदाय के उद्भव का सबसे पुराना साक्ष्य इन्हीं पुरास्थलों से प्राप्त होता है। यहीं से आरम्भिक कृषक एव पशुपालक समुदाय के अवशेष प्राप्त हुए हैं, लेकिन किसी प्रकार का कोई सतयुग, त्रेतायुग से युक्त कोई वैदिक वर्ण या जाति के निशान नहीं प्राप्त हुए हैं, तो फ़िर किस आधार पर वैदिक संस्कृति का उद्गम काल 1500 ई.पू. से 600 ई. पू. के काल को बताया जा रहा है। वास्तव में इस काल में ताम्र–पाषाण एवं ताम्र–निधि संस्कृति प्रचलित थी, इससे सम्बन्धि पुरातात्त्विक साक्ष्यों की भी प्राप्ति हुई है। परन्तु वेद में वर्णित तथ्य और इस काल से प्राप्त साक्ष्यों के बीच कोई मेल–जोल नहीं दिख़लाई देता है।

इस प्रकार प्रगतिवादी एक इतिहासकार राजीव पटेल वैदिक युग के अस्तित्व को पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आलोक में वैज्ञानिक विश्लेषण के पश्चात नहीं स्वीकार करते हैं एवं इस काल–ख़ण्ड में **ताम्र–निधि संस्कृति** के विद्यमान होने का दावा करते हैं। ऐसे कई प्रगतिवादी इतिहासकार हैं जिन्होंने वैदिक काल अथवा वैदिक आर्य सभ्यता के अस्तित्व को पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आलोक में नकार दिया है। उनका मानना है कि **यदि वैदिक काल 1500 ई.पू. के आस–पास रहा होता तो उसके प्रमाण धरातल से मिल रहे होते। राजीव पटेल** अपनी पुस्तक **वैदिक युग का घालमेल** में बताते हुए विद्वानों से प्रश्न करते हैं कि "आज़ आप लोगों ने किसी पुरातात्त्विक साक्ष्य को आधार मानते हुए ई.पू. की प्राचीन सभ्यता–संस्कृति की सच्चाई को स्वीकार क्यों नहीं किया है ? हर उत्खनन से प्राप्त साक्ष्यों को अपनी कल्पनाओं वाली ऋग्वेद की ऋचाओं से क्यों जोड़ते हैं ? प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्यों को पर्दे के पीछे रख़ते हुए अपना विश्लेषण और व्याख्या क्यों करते हैं ? **आज़ तक वेद नामक ग्रन्थ का प्राचीन साक्ष्य नहीं मिला है। इसी प्रकार संस्कृत का भी कोई प्राचीन साक्ष्य आज़ तक नहीं मिला है।"**[23]

निष्कर्ष : निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वैदिक कालीन संस्कृति के विषय में अब तक हमारी जो सोंच थी, नवीन अनुसंधानों के आलोक में हमें उसमें बदलाव करने की आवश्यकता है। **1500 ई.पू. से लेकर 600 ई.पू. के मध्य के इतिहास को पुनः पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आलोक में वैज्ञानिक पद्धित पर लिख़ने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय, डिग्री कालेज, माध्यमिक कालेज एवं प्रारम्भिक स्कूलों की पाठ्य पुस्तकों में जो वैदिक काल का इतिहास पढ़ाया जा रहा है, उसमें नवीन तथ्यों को समाहित करने की आवश्यकता है।** प्रगतिवादी इतिहाकारों ने अथक परिश्रम के पश्चात पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आलोक में वैदिक काल को देख़ने का जो श्रमसाध्य कार्य किया है उससे विद्यार्थियों के अतिरिक्त आम जनमानस को भी परिचित कराने की आवश्यकता है। लेख़क का ऐसा मानना है कि इस नवीन अनुसंधान से शोधार्थी, विद्यार्थी एवं भारत की आम जनता लाभान्वित होगी तथा इससे भारतीय इतिहास में एक नवीन अध्याय जुड़ने की प्रबल सम्भावना रहेगी।

संदर्भ :

1. जय नरायण पाण्डेय, ***पुरातत्त्व विमर्श,*** प्राच्य विद्या संस्थान, इलाहाबाद, पृ. 435–38
2. बी. बी. लाल, ***आर्यों के आदिदेश भारत,*** आर्यन बुक्स इन्टरनेशनल, नई दिल्ली, 2022 पृ. 5–6
3. *https://www.unesco.org/en/memoryworld/rigveda] Site visited Date, 23/12/2024,* लेख़ : ***मेमोरी ऑव द वर्ल्ड रजिस्टर, ऋग्वेद संहिता, ऋग्वेद संहिता–पदपथ ऋग्वेद संहिता भाष्य,*** **पृ. 4**
4. ***मेमोरी ऑव द वर्ल्ड रजिस्टर,*** पूर्वोद्धृत, पृ. 2
5. जय नरायण पाण्डेय, ***पुरातत्त्व विमर्श,*** पूर्वोद्धृत, पृ. 515
6. के. सी. श्रीवास्तव, ***प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति,*** यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, 2018–19, पृ. 82–83, एवं जय नरायण पाण्डेय, ***पुरातत्त्व विमर्श,*** पूर्वोद्धृत, पृ. 415
7. के. सी. श्रीवास्तव, ***प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति,*** पूर्वोद्धृत, पृ. 82–85
8. सुरेन्द्र कुमार शर्मा 'अज्ञात', ***क्या बालू की भीत पर खड़ा है हिन्दू धर्म,*** विश्व बुक्स (विश्व विजय प्रा. लि.), नई दिल्ली, पृ. 422
9. बी. बी. लाल, ***महाभारत की ऐतिहासिकता, साहित्य, कला तथा पुरातत्त्व के साक्ष्य,*** (हिन्दी अनु. नरेन्द्र कुमार सिन्हा), आर्यन बुक्स इन्टरनेशनल, नई दिल्ली, 2014, पृ. 62–67
10. राजीव पटेल, ***वैदिक युग का घालमेल,*** (तृतीय संस्करण) सम्यक प्रकाशन, 2022, बुद्धाब्द, 2566, पृ. 9–14
11. सुरेन्द्र कुमार शर्मा 'अज्ञात', ***क्या बालू की भीत पर खड़ा है हिन्दू धर्म,*** पूर्वोद्धृत, पृ. 43
12. राजेन्द्र प्रसाद सिंह, ***इतिहास का मुआयना,*** (द्वितीय संस्करण), सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020, बुद्धाब्द 2565, पृ. 15

13. जय नरायण पाण्डेय, ***पुरातत्त्व विमर्श,*** पूर्वोद्धृत, पृ. 460

14. *वही,* पृ. 449

15. *वही,* पृ. 470

16. *वही,* पृ. 499

17. राजीव पटेल, ***वैदिक युग का घालमेल,*** पूर्वोद्धृत, पृ. 41

18. *वही,* पृ. 41

19. *वही,* पृ. 41

20. जय नरायण पाण्डेय, ***पुरातत्त्व विमर्श,*** पूर्वोद्धृत, पृ. 503–522

21. *वही,* पृ. 553–78.

22. राजीव पटेल, ***वैदिक युग का घालमेल,*** पूर्वोद्धृत, पृ. 44

23. *वही,* पृ. 26–27